आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 5 जनवरी, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

जैविक पशुपालन : समय की मांग

नूतन वर्ष–2022 के शुभागमन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और अभिनंदन।

प्रिय किसान व पशुपालक भाईयो।

पशुधन हमारे देश की धरोहर है, यहां उच्च कोटी का पशुधन उपलब्ध है। यह पशुधन सीमान्त व गरीब किसानों व पशुपालकों के लिए आय का प्रमुख स्त्रोत है तथा ग्रामीण बेरोजगार युवाओं को रोजगार भी प्रदान करता है। विश्व की बढ़ती जनसंख्या के साथ–साथ खाद्य उत्पादन में वृद्धि एक चुनौती बनता जा रहा है। पशुपालन पर लागू होने वाले जैविक सिद्धान्त खाद्य उत्पादन बढ़ाने में भी मुख्य भूमिका निभाते हैं। कई दशकों से अत्याधुनिक तकनीकी उपयोग करने के बाद आज हम महसूस करने लगे हैं कि यदि इसी तरह हम अपने परम्परागत पद्धतियों को छोड़ते जायेंगे व आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति को ही अपनाते रहेंगे तो हमें तरह–तरह की समस्याओं का सामना करना होगा जैसे कि – पेस्टीसाइडस के दुष्प्रभाव, एन्टीबॉयोटिक प्रतिरोधकता, रोग प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास इत्यादि। इन समस्याओं के निराकरण हेतु हमें जैविक खेती व जैविक पशुपालन को अपनाने की आवश्यकता है। आज के समय में समाज के पढ़े–लिखे लोग सोशल मीडिया व सूचना तकनीकों के माध्यम से जैविक खेती व जैविक पशुपालन को भली–भांति समझने व अपनाने लगे हैं जिसके कारण दिन–प्रतिदिन जैविक उत्पादों की मांग बढ़ती जा रही है। जागरूक नागरिक ऐसे जैविक उत्पादों के तीन–चार गुना अधिक मूल्य भी चुकाने के लिए तैयार रहते हैं। इसी कारण किसानों व पशुपालकों को जैविक पशुधन सह जैविक कृषि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि वह अधिक आमदनी प्राप्त कर सके। जैविक पशुधन उत्पादन एक प्रकार का खाद्य तंत्र है, जिसमें पशुओं के कल्याण, पर्यावरण सुरक्षा, न्यूनतम मात्रा में औषधियों का प्रयोग तथा बिना पेस्टीसाइड के उत्पादन होता है। जैविक तंत्र इस प्रकार से विकसित किया जाता है कि जिसमें पशुओं के सुख व आराम में वृद्धि, दूध, मांस व अण्डों में अवशिष्ट तत्वों की कमी और पर्यावरण को कम हानि हो तथा पशु अपना नैसर्गिक व्यवहार प्रकट कर सके और उच्च गुणवत्ता युक्त चारा खा सके। अब समय आ गया है कि हमें अपने पूर्वजों की धरोहर, पुरानी परम्परागत पद्धतियों के साथ–साथ आधुनिक पद्धतियों को भी जीवन शैली में जगह देने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय ने भी अपने पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर जैविक पशुपालन व जैविक खेती को अपनाना शुरू कर दिया है तथा विश्वविद्यालय ने जैविक पशुपालन पर एक केन्द्र की स्थापना भी की है जो किसानों व पशुपालकों को जैविक पशुपालन से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान करता है। अतः किसानों व पशुपालक भाईयों को विश्वविद्यालय के साथ मिलकर जैविक पशुपालन की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

एक दिवसीय किसान एवं पशुपालक मेला-2021 में मंचस्थ मुख्य अतिथिगण

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

किसान एवं पशुपालक मेला–2021 का आयोजन

43 स्टॉल में कृषक पशुपालन तकनीकों का हुआ प्रदर्शन

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा एक दिवसीय किसान एवं पशुपालक मेले का शुभारंभ राज्य के आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग के कैबिनेट मंत्री श्री गोविन्दराम मेघवाल द्वारा 24 दिसम्बर को किया गया। मेले में 43 प्रदर्शनी स्टॉल में पशुपालन, कृषि, आई.सी.ए.आर. के 5 अनुसंधान संस्थानों सहित लाइन विभाग द्वारा कृषि और अन्नत पशुपालन तकनीकों के मॉडल, फ्लैक्स और प्रचार–प्रसार सामग्री का प्रदर्शन किया गया। पदेन परियोजना निदेशक आत्मा के सहयोग से बीकानेर के 9 ब्लोक के किसानों ने मेले में शिरकत की। समारोह के मुख्य अतिथि आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग के मंत्री श्री गोविंदराम मेघवाल ने कहा कि विशाल मेले और प्रदर्शनी के आयोजन से किसान, पशुपालक और उद्यमियों को नवीन योजनाओं और उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों को सीखने का एक बेहतरीन अवसर मिला है। श्री मेघवाल ने बड़ी संख्या में पहुंचे किसानों और पशुपालकों से आग्रह किया कि वे नवीन तकनीकें अपना कर आजीविका को अधिक सुगम और लाभकारी बना सकते हैं। आपदा प्रबंधन मंत्री ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पूरे राज्य में किसान और पशुपालकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अत्यंत उपयोगी बताते हुए गांव–ढ़ाणी तक पहुंचाने का आह्वान किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति और राज्यपाल सलाहकार मण्डल के सदस्य डॉ. ए.के. गहलोत ने कहा कि राजस्थान एक पशुधन प्रधान राज्य है। किसान और पशुपालक वैज्ञानिक नवाचारों से उत्पादन बढ़ाकर अपनी आजीविका को अधिक समृद्ध बना सकते हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि यह विश्वविद्यालय अपने 16 पशु विज्ञान केन्द्रों, 9 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों, एक कृषि विज्ञान केन्द्र और तीन संघटक महाविद्यालयों के मार्फत पशुपालन की नवीन तकनीकों और उन्नत पशुपालन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके राज्य में पशुपालन सेक्टर को सुदृढ़ बनाने के काम में जुटा हुआ है। भविष्य में विश्वविद्यालय इस तरह के मेलों का आयोजन अन्य जिलों में भी करेगा। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह और राजुवास के अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एस.सी. गोस्वामी ने विश्वविद्यालय द्वारा भेड़, बकरी, देशी–गौवंश के कल्याण कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर अतिथियों ने प्रसार शिक्षा में राजुवास के बढ़ते कदम फोल्डर और एक प्रशिक्षण संदर्शिका–उन्नत बकरी पालन और प्रबंधन का लोकार्पण किया। मेले के संयोजक और राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया की प्रदर्शनी स्टॉल में वेटरनरी विश्वविद्यालय के 15 विभिन्न विभागों की पशुपालन तकनीकों, पोल्ट्री की प्रजातियों का सजीव प्रदर्शन किया गया। राज्य के पशुपालक, कृषि विभाग, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग, उरमूल डेयरी, इफ्को, नाबार्ड, केन्द्रीय शुष्क बागवानी, भेड़ एवं ऊन अनुसंधान, उष्ट्र एवं अश्व अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय अर्द्ध शुष्क अनुसंधान संस्थान, टिड्डी विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, मोदी डेयरी ने अपने उत्पादों को प्रदर्शित किया। केन्द्रीय अनुसंधान संस्थानों के निदेशक, वैज्ञानिक प्रो. यशपाल शर्मा, डॉ. ए.साहू नाबार्ड के रमेश ताम्बी सहित वेटरनरी विश्वविद्यालय के निदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। इस मेले का विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर लाईव प्रसारण किया गया जिसकों हजारों लोगों ने घर बैठे देखा व सुना। इस अवसर पर पशुपालकों एवं किसानों के लिए गोष्ठी का आयोजन किया गया।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण पर प्रशिक्षण

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा संभाग के विभिन्न पशु चिकित्सालयों व पशु उपकेन्द्रों पर कार्यरत पशुधन सहायकों का पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 16 दिसम्बर को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का शुभारंभ अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. आर.के. सिंह, अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, क्षेत्र बीकानेर डॉ. हुकमा राम, डॉ. वीरेंद्र नेत्रा उपनिदेशक, पशुपालन विभाग एवं परीक्षा नियंत्रक, प्रो. उर्मिला पानू द्वारा किया। केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. रजनी जोशी, सह–अन्वेषक डॉ. दीपिका धूडिया, डॉ. मनोहर सैन, डॉ. महेंद्र तंवर, डॉ. देवेंद्र चौधरी व डॉ. चाँदनी जावा ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन एवं निस्तारण विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

राजुवास ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

उन्नत आवास प्रबंधन व रखरखाव से बकरियों में बढ़ सकती है उत्पादकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 8 दिसम्बर को आयोजित की गई। बकरियों में उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्नत व वैज्ञानिक प्रबंधव रखरखाव विषय पर विषय विशेषज्ञ डॉ. बी. राय ने पशुपालकों से वार्ता की। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि बकरी पालन भूमिहीन, सीमान्त किसानों की आर्थिक उन्नति का आधार है। वर्तमान में राजस्थान में बकरियों की संख्या 20.84 मिलियन से भी ज्यादा है और राजस्थान बकरी के दूध उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है साथ ही मांस उत्पादन में प्रदेश चौथे स्थान पर है। प्रदेश में बकरी पालन व्यवसाय के विकास की अपार संभावनाएं हैं ऐसे में पशुपालक बकरी पालन व्यवसाय में वैज्ञानिक प्रबन्धन से अधिकाधिक लाभ कमा सकते हैं। आमंत्रित विशेषज्ञ डॉ. बी. राय, निदेशक, केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा ने विस्तृत जानकारी देते हुए बकरियों के आवास प्रबंधन, बकरियों के फार्म के लिए आवास आवश्यकता, बकरियों के आहार प्रबंधन, चराई व्यवस्था, परजीवी सुरक्षा, स्वास्थ्य रक्षा आदि के द्वारा अधिक उत्पादन प्राप्त करने के बारे में बताया। उन्होंने उन्नत बकरी पालन व्यवसाय में बकरियों की पहचान हेतु टैगिंग व रिकॉर्ड रखरखाव के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

गाढ़वाला के पशुपालकों ने जाना वैज्ञानिक बकरी पालन

आत्मा योजनांतगर्त उन्नत बकरी पालन प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण बीकानेर में आयोजित किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया की इस प्रशिक्षण में गाढ़वाला ग्राम के 30 पशुपालक शामिल हुए। प्रशिक्षण के दौरान बकरी पालन का आर्थिक महत्व, बकरी दुग्ध प्रसंस्करण, बकरी प्रजनन, प्रमुख रोग एवं बचाव, आवास प्रबंधन, टीकाकरण, कृमिनाशन, उन्नत पोषण एवं बकरियों की प्रमुख नस्लों पर विषय विशेषज्ञ प्रो. राहुल सिंह पाल, डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. देवीसिंह, डॉ. मनोहर सैन, डॉ. मन्जू नेहरा, डॉ. विजय कुमार, डॉ. अमित कुमार और डॉ. मंगेश कुमार द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण के समापन पर मुख्य अतिथि अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष प्रो. आर.के. सिंह थे। इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित प्रशिक्षण संदर्शिका का विमोचन किया गया। प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में गोकुल प्रथम, भागीरथ द्वितीय एवं प्रहलादराम तृतीय स्थान पर रहे। डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

जयमलसर व गाढ़वाला में चिकित्सा एवं टीकाकरण शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (यू.एस.आर.) के तहत गोद लिए गांव जयमलसर एवं गाढ़वाला में चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, बीकानेर के सहयोग से 30 एवं 31 दिसम्बर को चिकित्सा एवं कोविड–19 टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। जयमलसर में डॉ. दिनेश मुन्दडा, प्रभारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, जयमलसर एवं गाढ़वाला में डॉ. कुलदीप यादव, प्रभारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र केसरदेसर जाटान के नेतृत्व में किया गया। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोन्सीबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि इन शिविरों के दौरान खांसी, जुकाम, बुखार एवं अन्य मौसमी बीमारियों के लगभग 218 रोगियो का उपचार किया गया तथा आवश्यकतानुसार रक्त दाब, शुगर, एनीमिया इत्यादि की जांचे की गई। शिविरों के दौरान कोविड–19 टीकाकरण भी किया गया जिसमें लगभग 175 लोगों को वैक्सीन लगाई गई।

गोबर से खाद और गोमूत्र से कीट नियंत्रक उत्पाद प्रशिक्षण पर होगा कार्य

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रदेश के तीन वेटरनरी कॉलेज, सात पशुधन अनुसंधान केन्द्र और 14 पशु विज्ञान केंद्रों और निकटवर्ती गोशालाओं को गोबर से खाद और गोमूत्र से कीट नियंत्रक बनाने का प्रशिक्षण केंद्र बनाएगा। इन केंद्रों पर पशुपालकों एवं युवाओं को खाद और कीट नियंत्रक बनाने का अगले वर्ष से प्रशिक्षण दिए जाने की योजना है। वेटरनरी विश्वविद्यालय और राजस्थान गो सेवा परिषद के बीच इस आशय के एम.ओ.यू. को लेकर विश्वविद्यालय में आयोजित बैठक में यह तय किया गया कि पशु विज्ञान केंद्र अपनी निकटवर्ती गोशालाओं में प्रशिक्षण की एक डेमो यूनिट तैयार करेंगे। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने विश्वविद्यालय स्तर पर प्रशिक्षण की आधारभूत संरचना का विश्लेषण किया। परिषद के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. ए.के. गहलोत ने प्रदेश के सभी गांवों में से एक–एक युवक को गोबर एवं गौमूत्र से खाद और कीट नियंत्रक बनाने का प्रशिक्षण देने की कार्य योजना रखी। इस कार्य योजना के तहत गोबर से खाद और गो मूत्र से कीट नियंत्रक बनाने के नये उद्योग सेक्टर का सूत्रपात होगा। राज्य के सभी गांवों के पशुपालक एवं युवा प्रशिक्षण के बाद इनका उत्पादन शुरू कर सकेंगे। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने इसी वित्तीय वर्ष में पशुपालकों व युवाओं को प्रशिक्षण देने की कार्य योजना रखी जिसे राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजने के बिंदुओं पर चर्चा की गई। परिषद अध्यक्ष हेम शर्मा ने परिषद के कार्यों की रूप रेखा प्रस्तुत की। गजेंद्र सिंह सांखला, अजय पुरोहित, प्रो. बृजनन्दन श्रृंगी ने भी सुझाव दिए।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 7, 14, 16 एवं 21 दिसम्बर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर, दिनांक 2–3, 9–10, 17–18 एवं 27–28 को आत्मा योजनान्तर्गत एवं 23–24 एवं 29–30 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 298 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 13, 15 एवं 17 दिसम्बर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर, दिनांक 6–7 एवं 22–23 दिसम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत एवं 20–21, 27–28 एवं 30–31 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 266 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 8, 10, 28 एवं 30 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 13–14, 15–16, 17–18, 20–21 एवं 22–23 दिसम्बर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 247 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 7, 9, 14, 16, 18, 20, 22 एवं 24 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर एवं 27–28 एवं 29–30 दिसम्बर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 326 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 9, 10, 13, 15, 17, 27 एवं 29 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 21–22 एवं 23–24 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में कुल 250 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 8, 10, 14 एवं 23 दिसम्बर को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 15–16, 17–18, 21–22, 27–28 एवं 29–30 दिसम्बर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 319 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 8, 10, 13, 17, 18, 23 एवं 24 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 20–21 दिसम्बर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 294 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा आत्मा योजनान्तर्गत दिनांक 6–7, 8–9, 14–15, 16–17, 20–21, 22–23, 27–28 एवं 30–31 दिसम्बर को आयोजित दो दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 240 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 8, 15, 17 एवं 22 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत 13–14 एवं 20–21 को केन्द्र परिसर में आयोजित ऑफलाईन दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा आत्मा योजनान्तर्गत दिनांक 15–16, 17–18, 20–21, 23–24 एवं 27–28 दिसम्बर को दो दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 9, 11, 15, 20 एवं 30 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 13–14, 17–18, 23–24 एवं 27–28 दिसम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 251 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 2, 4, 7 एवं 10 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत 17–18, 19–20, 21–22 एवं 23–24 को केन्द्र परिसर में आयोजित ऑफलाईन दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 211 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 7, 10, 14, 21, 27 एवं 28 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 19–20, 22–23 एवं 29–30 दिसम्बर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु. जाति उपयोजना के तहत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 297 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 10, 14, 18 एवं 21 दिसम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत 22–23 एवं 28–29 दिसम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 3 एवं 24 दिसम्बर गांव चक–16जेएसएन एवं भैरूसरी में तथा दिनांक 5, 7–8, 17–18 एवं 27–29 को केन्द्र परिसर में एक व दो दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 175 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

डेयरी व्यवसाय हेतु वैज्ञानिक पशु आहार प्रबन्धन

डेयरी व्यवसाय के लिए उत्तम नस्ल के साथ–साथ आहार प्रबंधन अति–आवश्यक है। उचित आहार प्रबंधन से न केवल पशु अधिक दूध देते हैं बल्कि उनकी शारीरिक बढ़वार, प्रजनन क्षमता एवं स्वास्थ्य भी सही रहता हैं। लाभप्रद डेयरी व्यवसाय हेतु पशु को बचपन से लेकर वृद्वि की विभिन्न अवस्थाओं जैसे प्रजनन काल एवं उत्पादन काल के दौरान संतुलित आहार उपलब्ध होना चाहिए। बछड़े–बछड़ियों की उनकी प्रारम्भिक अवस्था में वृद्धि एवं मृत्यु, गर्भकाल में मां के आहार प्रबंधन से प्रभावित होता है। बछड़ियों को जन्म के 2 घंटे के अन्दर मां का खींस पिलाना आवश्यक है। खींस की मात्रा का निर्धारण बछड़ियों के शारीरिक भार पर निर्भर करता है। जब बछड़ियों को मां के साथ रखा जाता है, तो आवश्यकतानुसार वे मां से पोषण ले लेती हैं, परन्तु यदि कृत्रिम विधि से पाला जा रहा है, तो इस बात का महत्व और भी अधिक हो जाता है। प्रारम्भिक अवस्था में दूध बच्चे के लिए सम्पूर्ण आहार का कार्य करता है इसलिए उसे समुचित मात्रा में दूध उपलब्ध होना चाहिए। नवजात के पालन–पोषण में सबसे महत्वपूर्ण स्थान खींस पिलाने का है। खींस न मिलने से बछड़े–बछड़ियों में रोगों से लड़ने की क्षमता का विकास नहीं हो पाता है, साथ ही बीमार होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः नवजात बछड़ों को प्रथम दो से तीन दिनों के जीवन में खींस पिलाने का विशेष महत्व होता है। कभी–कभी किसी कारणवश जैसे– गाय के बीमार होने पर या अकस्मात मर जाने पर या थन में चोट लगने पर नवजात को अगर सीधे थनों से खींस उपलब्ध न हो तो दूसरे गाय या भैंस की खींस पिला दें। खींस में भिगोकर हाथ की अंगुलियां बच्चे के मुंह में डाले। बछड़ा अंगुली चुसे तभी उसका मुंह धीरे–धीरे खींस के पास ले जाऐं। जब बच्चे का मुंह खीस के सतह को छूने लगे तब अंगुली को भी खीस में डूबा दें। बछड़ा अंगुली तो चूसेगा साथ ही खींस भी उसके मुंह में जाने पर वह तेजी से चूसना शुरू कर देगा। बछड़ों को खींस न मिलने पर समतुल्य प्रतिपूरक आहार देना चाहिए। जिसमें दो अण्डे, 30 मिली अरण्डी का तेल आधा किलोग्राम दूध 4–5 दिनों तक देना चाहिए। नवजातों को अत्यधिक खींस एक बार में नही पिलाकर दिन में दो से तीन बार देना चाहिए। एक दिन मे इसके भार का 2.5 प्रतिशत मात्रा मे ही खींस देनी चाहिए। बछड़े–बछड़ियों में विकास को सुनिश्चित करने हेतु उम्र के दूसरे महीने से उन्हें दाना युक्त आहार के साथ सुपाच्य हरे चारे भी संतुलित मात्रा में उपलब्ध करा देना चाहिए। इस प्रकार पाले गए बछड़े–बछड़ियों का शरीर भार छः महीने की उम्र में 100–125 किलो तक हो जाता है। इस उम्र में इन पशुओं का यदि समुचित आहार प्रबंध सुनिश्चित हो जाए तो उनका शारीरिक विकास निरंतर होता रहता है। इस अवस्था में उनको पर्याप्त हरे चारे के अलावा नियमित रूप से प्रोटिन युक्त दाना भी उपलब्ध होना चाहिए। दाने में प्रोटीन की मात्रा 20–22 प्रतिशत एवं कुल पाच्य पदार्थ 72–75 प्रतिशत तक होनी चाहिए। इस समय बछड़ियों में 500–600 ग्राम वृद्धि प्रतिदिन सुनिश्चित करने हेतु उन्हे 1.5 किलो दाना प्रतिदिन खिलाने की आवश्यकता होती है, इसके अतिरिक्त 10–15 किग्रा अच्छा चारा भी खिलाना चाहिए। सूखे व हरे चारे की मात्रा क्रमशः एक एवं दो अनुपात में रखना चाहिए।

अच्छी देखभाल से बछड़ियों का शरीर–भार एक साल की उम्र तक 150–225 किलो तक हो जाता है और 18 महीने की उम्र तक यह वजन बढ़कर 225 से 300 किलो तक होने पर पशु गर्मी दिखा देता है। बछड़ियों में गर्भधारण करने के उपरान्त से ही उचित पोषण की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। ऐसी बछड़ियों का शारीरिक भार भी पूर्ण विकसित नहीं होता है। अतः उन्हें स्वयं के अनुरक्षण एवं शरीर में पल रहे बच्चे के संपोषण के अलावा शारीरिक वृद्धि हेतु भी उचित पोषण की आवश्यकता होती है। ग्याभिन पशु के प्रारंभ के 5–6 महीने में बच्चे की बढ़वार हेतु विशेष अतिरिक्त राशन की आवश्यकता नहीं होती परन्तु अन्तिम 2–3 महीनों में मां के गर्भ में बच्चा तेजी से बढ़ता है। अतः इस दौरान उसे समुचित मात्रा में अतिरिक्त आहार की आवश्यकता होती है। इस अवस्था मे कितना अतिरिक्त आहार दिया जाए इसका निर्धारण उसकी शारीरिक दशा देखकर करना चाहिए।

पशु के ब्याने के बाद आहार

सम्पूर्ण ब्यांत की अवधि में दुधारू पशुओं का संतुलित आहार डेयरी पालन व्यवसाय की रीढ़ है। सबसे महत्वपूर्ण काल ब्यांत की शुरूआत का काल होता है, क्योंकि इस अवधि में दिया गया पोषण यह निर्धारित करता है कि पशु अपनी क्षमतानुसार उत्पादन करने मे सक्षम है या नहीं।

- ब्याने के बाद पशु को तत्काल कार्बोहाड्रेट्स चारा जैसे–मक्का खिलाना चाहिए। ब्याने के 3–4 दिनों तक तैलीय खल्लियां न दें।
- दाने की मात्रा धीरे–धीरे बढ़ाना चाहिए जिससे एक या दो सप्ताह में मादा अपनी निर्वाह एवं उत्पादन की आवश्यकतानुसार अधिक से अधिक दाना खा सकें। ब्याये पशु को गेहूं का दलिया, गुड़, सोठ और अजवाइन आदि को मिलाकर हल्का पकाकर खिलाना चाहिए।
- पशु को गुनगुना पानी पीने के लिए इच्छानुसार दें।
- पशु शाला की सफाई फिनाइल/किटाणुनाशक/निसंक्रामक की घोल से करें।
- पशु को पूर्ण आहार क्षमता तक शीघ्र पंहुचने हेतु सुपाच्य एवं अधिक ऊर्जा घनत्व वाले आहारीय पदार्थो का अधिक प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं। अतः इस दौरान पशु को संतुलित आहार दें।
- पशुपालक सही और संतुलित आहार से पशु को दूध उत्पादन क्षमता तक शीघ्र पहुंचा सकते हैं। एक बार जब पशु अधिकतम दूध उत्पादन तक पहुंच जाए तो पशु की खुराक दूध उत्पादन के स्तर के अनुरूप निश्चित की जानी चाहिए।
- चारे से दूध लेना सबसे सस्ता होता है, अतः भरपूर हरे एवं सूखे चारे का प्रयोग पशु आहार मे अवश्य करें।
- जीवन निर्वाह राशन के अतिरिक्त गाय को दूध उत्पादन के लिए 3 लीटर दूध पर प्रति दिन 1 किलो दाना–मिश्रण तथा भैंसों को 2.0 लीटर दूध पर 1 किलो ग्राम दाना मिश्रण दिया जाता ह्रै।
- एक गाय को प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण तथा 100 कि.ग्रा. भार पर प्रतिदिन 8–10 ग्राम नमक देना चाहिए।
- 10 कि.ग्रा. दूध देने वाले पशुओं के लिए एक दिन का औसत राशन 10–12 कि.ग्रा. हरा चारा, 5–6 कि.ग्रा. भूसा और 4.5 कि.ग्रा. दाना मिश्रण हैं। जब भी दाने में परिवर्तन करें, धीरे–धीरे करें, अचानक परिवर्तन करने से पशु के पाचन तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
- दुधारू पशुओं को समय–समय पर कैल्शियम युक्त औषधियां अवश्य देते रहना चाहिए। जिससे मिल्क फीवर, दूध की कमी आदि होने का भय नहीं रहता है।
- अधिक उत्पादन हेतु पशुओं के आहार में वसा/तेल का प्रयोग भी 300–400 ग्राम प्रति पशु प्रति दिन किया जाना चाहिए जो कि दाने की खल से पशु को मिल जाता है। पशु के आहार को सुनिश्चित करते समय उसकी शारीरिक दशा पर पैनी नजर रखनी चाहिए, पशु न तो अधिक कमजोर हो और न ही अधिक मोटा होना चाहिएं।

साथ ही इन बातों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए कि पशु ब्याने के समय अत्यधिक मोटा न हो जाये, क्योंकि कभी–कभी ग्याभिन पशु को अधिक आहार खिलाने से बछड़े–बछड़ियों का आकार बहुत बढ़ जाता है और पशु को ब्याने के समय परेशानी होती हैं। यह परेशानी सामान्य तौर पर मोटे पशु को अधिक होती है। अधिक मोटे पशु में ब्याने के बाद पशु की आहार ग्रहण करने की क्षमता काफी कम हो जाती है।

डॉ. मुकेशचन्द्र शर्मा, डॉ. राजेन्द्र कुमार नागदा, डॉ. महेन्द्र मील
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

पशुओं में गोबर की जांच क्यों जरूरी है

पशुओं में कई परजीवी रोगों के कारण आफरा, दस्त, कब्ज, खून की कमी, उत्पादन में कमी, कमजोरी, भूख न लगना, मिट्टी खाना, गोबर में खून आना, जबड़ों के नीचे सूजन आना आदि लक्षण दिखाई देते हैं। इन परजीवियों में मुख्यतः फीताकृमि, गोलकृमि व सूक्ष्म प्रोटोजोआ है जो पशुओं में रोग करते हैं। इनमें से कुछ कृमि पशुओं की बढ़वार व उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। अतः समय–समय पर पशुओं में गोबर की जांच काफी आवश्यक हो जाती है। गोबर की जांच द्वारा विभिन्न परजीवियों की पहचान कर समय पर दवा देकर ठीक किया जा सकता है। गोबर की जांच में परजीवियों के अंडे व लार्वा आदि को देखकर विशिष्ट प्रकार के परजीवियों की जानकारी मिल जाती है। सामान्यतः पशु का आहार यदि संतुलित है, पशु स्वस्थ है तो उसकी पाचन क्रिया सही चल रही है तो पशु गाढ़ा व दलिये जैसा गोबर करता है। यह पशु की सही उपापचय क्रिया को दर्शाता है। गोबर के भौतिक निरिक्षण से भी पशु के स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारी मिल जाती है।

❖ **तरल बुलबुले युक्त गोबर–** ऐसा गोबर अम्लरक्तता रोग में होता है। इस रोग में पशु को पतले दस्त लगते हैं व पशु खाना छोड़ देता है। यह रोग पशु को अधिक मात्रा में बांटा, दाना या कार्बोहाइड्रेट देने से होता है। इस रोग से बचाव के लिए पशु के आहार में सूखा चारा शामिल करें। पशु को एक ही समय में ज्यादा आहार न दें।

❖ **ढीला व ढेर नही बनने वाला गोबर–** इस प्रकार का गोबर कम गंभीर अम्लरक्तता में होता है। पशु को जब रसीली व नरम घास अधिक देते हैं या अन्तुलित आहार तो ऐसा गोबर बनता है।

❖ **गाढ़ा व भारी गोबर–** बछड़ियों व दूध न देने वाली गायों में यह पूर्ण स्वास्थ्य को दर्शाता है परन्तु दूध देने वाले पशुओं में यह आहार में असंतुलन को दर्शाता है।

❖ **गोबर के सख्त गोले–** यदि पशु आहार में अधिक रेशे, नमक की कमी, प्रोटीन की कमी या रेशों की मात्रा ज्यादा होती है तो पशु सख्त गोले के रूप में गोबर करता है। पशुओं में ऐसा गोबर निर्जलीकरण व कम उत्पादन अवस्था को दर्शाता है।

❖ **हल्के व गहरे रंग का पतला गोबर–** अधिक दलहनी चारा खाने से आफरा होने पर पशु हल्के रंग का पतला गोबर करता है। आहार में जरूरत से ज्यादा प्रोटीन या रेशों की कमी हो तो पशु गहरे रंग का पतला गोबर करता है।

❖ **गोबर में अनाज के दाने–** दाने की पिसाई में कमी या आफरा रोग में पशु गोबर में अनाज के दाने मिलते हैं। अधिक उम्र के पशुओं में दांतों के घिस जाने पर भी ऐसा गोबर बनता है।

❖ **श्लेष्मायुक्त गोबर–** फंफूदी युक्त आहार खाने से पशुओं में श्लेष्मायुक्त गोबर करता है।

गोबर का सूक्ष्मदर्शीय निरीक्षण– सूक्ष्मदर्शीय निरीक्षण में गोबर की कम मात्रा स्लाइड पर रखते हैं और इसे सेलाइन के साथ मिलाते हैं और कवरस्लिप रखकर सूक्ष्मदर्शी द्वारा जांच करते हैं। पशु रोग निदान का यह सबसे सही व सस्ता तरीका है। इस प्रकार के विश्लेषण में गोबर का गुणात्मक व मात्रात्मक रूप से विश्लेषण किया जाता है। गुणात्मक विश्लेषण में परजीवियों की विभिन्न जीवन अवस्थाओं जैसे अंडे, सिस्ट व लार्वा आदि की विशिष्ट आकार व आकृति के आधार पर एक विशेष परजीवी की पहचान की जाती है। मात्रात्मक विश्लेषण में अंडे, सिस्ट व लार्वा आदि की मात्रा की गणना कर रोग की गम्भीरता का आंकलन किया जाता है। गोबर की जांच के आधार पर विभिन्न परजीवियों की पहचान कर पशुचिकित्सक की सलाह पर दवा दे सकते है।

गोबर का नमूना लेते समय ध्यान में रखने के बिन्दु :–

❖ जहां तक संभव हो गोबर के नमूने सीधे पशु के मलद्वार से ही लें।
❖ गोबर का नमूना ताजा एवं बाहरी मिट्टी से मुक्त होना चाहिए।
❖ नमूना हवा रहित पात्र या साफ पोलीथीन में लेना चाहिए।
❖ यदि नमूने को प्रयोगशाला में भेजने में समय लगे तो उसे फ्रिज में रखे या उसमें 10 प्रतिशत फोर्मल सेलाइन डालना चाहिए।
❖ नमूनों को विशेष चिन्ह या नम्बर लगाने चाहिए, जिससे पता चल सके की उक्त नमूना किस पशु का है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

वैज्ञानिक गौपालन के व्यावहारिक सुझाव

एक गौपालक पशुपालन के वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर दुग्ध उत्पादन को दो से तीन गुना बढ़ा सकता है, जिससे प्रधानमंत्री जी के किसानों की आमदनी को दुगुना करने के सपने को साकार किया जा सकता है। पशुपालक निम्न सुझावों का पालन करके अपने फॉर्म के दुग्ध उत्पादन को बढ़ा सकता है।

प्रजनन से सम्बन्धित सुझाव :

❖ संकर तथा देशी पशुओं की संख्या आधी तथा अधिकतर पशुओं की उम्र तीन से पांच साल के बीच होनी चाहिए। लगभग 21 दिनों के अन्तराल में गाय या भैंस में मद चक्र या गर्मी के लक्षणों को जांचते रहना चाहिए।
❖ कृत्रिम गर्भाधान उचित समय पर (गर्मी आने के 12 से 16 घंटे बाद) ही करवाना चाहिए जिससे पशु में गर्भ धारण करने की अधिकतम संभावना हो। बच्चे के जन्म के 80 से 100 दिन बाद गाय अगले गर्भ धारण हेतु तैयार हो जाती है। समय अंतराल में पशु में गर्भाधान कर देना चाहिए।
❖ गर्भाधान के 45 से 60 दिन बाद गर्भावस्था की जांच करनी चाहिए जिससे गर्भ धारण का जल्दी पता लगाया जा सके। 45 दिन से पहले गर्भधारण का सटीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।

पशु आहार से सम्बन्धित सुझाव:

❖ नवजात बछड़े को पहला खींस जन्म के 24 घंटे के भीतर पिलाना चाहिए। खींस बछड़े को 15 दिनों तक पिला सकते हैं।
❖ दुधारू पशु को साल भर संतुलित आहार देना चाहिए जिसमें 40–50 किलो हरा चारा (दलहनी तथा अदलहनी दोनों) या 20 किलो हरा चारा व 10 किलो सूखा चारा सम्मिलित हो। हरे चारे के अलावा पशु को 3 किलो दूध पर 1 किलो के हिसाब से पशु आहार (पशु दाना) भी खिलाना चाहिए।
❖ हरे चारे की खेती करते समय उच्च पैदावार देने वाली किस्मों का तथा उत्तम किस्म की उर्वरक का चयन करना चाहिए।

पशु स्वास्थ्य से सम्बन्धित सुझाव:

❖ समय पर मौसमी बीमारियों के खिलाफ टीकाकरण करवाना चाहिए।
❖ ब्राह्य परजीवियों जैसे किलनी, चिंचड़ आदि की रोकथाम व निराकरण के लिए उचित कीटनाशक का उपयोग करना चाहिए। परजीवी जनित रोगों से बचाव के लिए बछड़ों में कृमिनाशक दवा का उपयोग करना चाहिए।
❖ बीमार पशु, रिपीटर पशु तथा पशु के गर्मी में न आने का सही इलाज पशु चिकित्सक द्वारा करवाना चाहिए।
❖ संक्रमित पशु की मृत्यु पश्चात उसके शरीर को जमीन में दफना देना चाहिए तथा उस पर चूना एवं केरोसीन छिड़कना चाहिए।

डेयरी प्रबंधन से सम्बन्धित सुझाव:

❖ पशुओं को ताजा पानी सर्दियों में 3 बार तथा गर्मियों में 4 बार देना चाहिए।
❖ गायों में सींग उनके जन्म के एक महीने के भीतर कटवा देने चाहिए।
❖ नर पशु में बधियाकरण एक से दो साल के भीतर कर देना चाहिए।
❖ मादा संकर पशु में कम से कम 60 दिन शुष्क काल (ड्राई पीरियड) होना चाहिए।
❖ तेज गर्मियों के समय भैंसों पर पानी फव्वारें से छिड़काव करना चाहिए।
❖ पशु बाड़े में छायादार पेड़ों को लगाना चाहिए।

दुग्ध दुहने से सम्बन्धित सुझाव:

❖ दूध दुहते समय पशु की पूंछ को बांध देना चाहिए।
❖ दुहने से पहले हाथों को साबुन से अच्छे से धोकर सुखा लेना चाहिए।
❖ दूध दुहने वाली जगह पर मक्खियां, धूल व धुंआ नहीं होना चाहिए।
❖ दूध डालने के लिए साफ व सुखे बर्तनों का ही उपयोग करना चाहिए जिनका मुंह ज्यादा खुला न हो। दूध दुहने से पहले तथा बाद में पशु के थनों को साफ पानी से धोना चाहिए व साफ नर्म कपड़े से पोंछना चाहिए।
❖ दुग्ध दोहन की विधियों में पूर्ण हस्त विधि सर्वोत्तम है।

डॉ. मोहित जैन एवं डॉ. सुनीता पारीक,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जनवरी, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	बहुत कम संभावना
एंथ्रेक्स	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	–	–	अलवर, भरतपुर
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	हनुमानगढ़	झुंझूनूं	बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	बाड़मेर, बीकानेर, धौलपुर, जैसलमेर, जोधपुर, चूरू, जैसलमेर, जालौर, नागौर, पाली
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	दौसा	–	गंगानगर
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	अलवर, जयपुर, दौसा	श्रीगंगानगर, सीकर	अजमेर, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, चूरू, धोलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, झुंझूनू, जोधपुर, करौली, नागौर, पाली, राजसमन्द, सवाई माधोपुर, सिरोही, टोंक, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, बकरी	–	दौसा, करौली, जोधपुर,	अजमेर, अलवर, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चूरू, धोलपुर, डूंगरपुर, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, झुंझूनू, नागौर, पाली, राजसमन्द, सीकर, सिरोही, उदयपुर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	चूरू, जयपुर	दौसा, टोंक	अजमेर, अलवर, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बॉसवाड़ा, बारां, चित्तौड़गढ़, धोलपुर, डूंगरपुर, जैसलमेर, जालौर, झुंझूनू, करौली, नागौर, पाली, सवाई माधोपुर, सीकर सिरोही, उदयपुर
माता रोग	भेड़, बकरी	चूरू, झुंझुनूं	–	बाड़मेर, श्रीगंगानगर, जयपुर, नागौर, सीकर
स्वाइन फिवर	सूअर	जयपुर	–	भरतपुर, हनुमानगढ़
थीलेरिओसिस	गाय के बछड़े	–	–	गंगानगर, हनुमानगढ़, बूंदी, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें - प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

मीठालाल ने डेयरी फार्मिंग को बनाया आय का स्त्रोत

राजस्थान प्रदेश में वर्षा आधारित कृषि की अनिश्चितता के चलते किसानों एवं पशुपालकों के लिए पशुपालन आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का अच्छा विकल्प है। आज के युग में बेरोजगारी की समस्या के चलते सिरोही जिले के गांव सिधरथ के निवासी मीठालाल माली ने पशुपालन में डेयरी फॉर्मिंग को अपनी आय का स्त्रोत बनाकर सफलता प्राप्त की है। मीठालाल अपने पिता के साथ पांरपरिक खेती कर रहे थे, लेकिन पांरपरिक खेती से मीठालाल माली को वर्षा की अनिश्चितता के कारण आमदनी अच्छी नहीं हो रही थी तो उन्होनें वर्ष 2016 से कृषि के साथ–साथ गाय, भैंस और मुर्गी पालन को मार्डन व्यवसाय के रूप में चयन किया। पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही के वैज्ञानिकों ने खेती के साथ–साथ पशुपालन में डेयरी फार्मिंग करने की सलाह दी, उन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही से पशुपालन से सबंधित विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर पशुपालन व्यवसाय को वैज्ञानिक तौर–तरीके से करने का संकल्प लिया। मीठालाल ने डेयरी फार्म का काम 10 गायों से शुरू किया था। आज इनके पास 10 भैंसे और 05 पाडियां और गिर नस्ल की 140 गाय और बछड़ियों के साथ–साथ 50 मुर्गियां भी हैं। डेयरी फार्मिंग में प्रतिदिन लगभग 400 लीटर से अधिक दूध उत्पादन कर रहे हैं उनको प्रतिवर्ष लगभग 8–10 लाख रूपये की आय प्राप्त हो जाती है। मीठालाल ने अपने कुएं की जमीन के आधे हिस्से में पशुओं के लिए हरे चारे का उत्पादन कर रहें हैं। उन्होंने डेयरी फार्म की मदद से अपना आर्थिक सुधार कर आत्मनिर्भरता की मिशाल कायम की है। मीठालाल पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही के लगातार सम्पर्क में रहते हुए निरन्तर डेयरी फार्म को आगे बढ़ा रहे हैं तथा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर टीकाकरण, खनिज लवणों की उपयोगिता, संतुलित पशु आहार, पशुओं की विभिन्न बीमारियों तथा उनकी रोकथाम की जानकारी प्राप्त करते हैं तथा उन्हें डेयरी फार्म से बहुत अच्छा लाभ मिल रहा है। वह अपने डेयरी व्यवसाय से खुश है तथा इस कार्य के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही के वैज्ञानिकों को धन्यवाद प्रकट करते हैं।

सम्पर्क- मीठालाल, गांव सिधरथ, जिला सिरोही (मो. नं. 9950423738)

निदेशक की कलम से...

देशी गौवंश के दूध उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता

प्रिय पशुपालक भाइयों। नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

पशुपालन राजस्थान की आर्थिक व्यवस्था का मूल आधार है तथा पशुधन राजस्थान का प्रमुख धन है साथ ही पशुधन से होने वाला उत्पादन हमारी रोजमर्रा की आय का जरिया भी है। राजस्थान का देशी गौवंश विश्व में प्रसिद्ध है तथा देशी गौवंश के दूध उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है, परन्तु कुल दूध उत्पादन में हमारा राज्य उत्तरप्रदेश के बाद दूसरे स्थान पर है। राजस्थान में कृषि मौसम आधारित है तथा राजस्थान में अकाल की भी संभावना बनी रहती है। अतः इन परिस्थितियों में आय बढ़ाने का प्रमुख साधन पशुपालन ही है तथा पशुधन कृषि उत्पादन में कमी होने की स्थिति में पूरी तरह हमारा साथ देता है। राजस्थान की देशी नस्लों में राठी, थारपारकर, साहिवाल, गीर, मालवी, कांकरेज आदि प्रमुख नस्लें हैं। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर देशी गौवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय देशी गौवंश के दूध उत्पादन को बढ़ाने के लिए गौवंश की देशी नस्लों में सुधार, प्रजनन व पोषण की अनेक तकनीकों पर कार्य कर रहा है। इन देशी गौवंश में दूध उत्पादन की क्षमताऐं मौजूद है जिसका अच्छे पोषण एवं प्रबन्धकीय उपायों से पूरा दोहन किया जा सकता है। पशुपालक भी अपनी पशु सम्पदा के उचित खान–पान, रहन–सहन और प्रजनन सम्बन्धी वैज्ञानिक जानकारियां विश्वविद्यालय से प्राप्त कर अधिक उत्पादन ले सकते हैं तथा अपने पशु का दूध उत्पादन बढ़ा सकते हैं। अतः नववर्ष में हम सभी को दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए संकल्प लेने की आवश्यकता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया